Mahakali Chalisa

॥ दोहा ॥

मात श्री महाकालकि ध्याऊँ शीश नवाय ।
जान मोहि निजिदास सब दीजै काज बनाय ॥

॥ चौपाई ॥

नमो महा कालकि भवानी।
महमि अमति न जाय बखानी॥ 1 ॥

तुम्हारो यश तहिुँ लोकन छायो।
सुर नर मुननि सबन गुण गायो॥ 2 ॥

परी गाढ़ देवन पर जब जब।
कयिो सहाय मात तुम तब तब॥ 3 ॥

महाकालकि घोर स्वरूपा।
सोहत श्यामल बदन अनूपा॥ 4 ॥

जभि्या लाल दन्त वकिराला।
तीन नेत्र गल मुण्डन माला॥ 5 ॥

चार भुज शवि शोभति आसन।
खड्ग खप्पर कीन्हें सब धारण॥ 6 ॥

रहें योगनिी चौसठ संगा।
दैत्यन के मद कीन्हा भंगा॥ 7 ॥

चण्ड मुण्ड को पटक पछारा।
पल में रक्तबीज को मारा॥ 8 ॥

दयिो सहजन दैत्यन को मारी।
मच्यो मध्य रण हाहाकारी॥ 9 ॥

कीन्हो है फरि क्रोध अपारा।
बढ़ी अगारी करत संहारा॥ 10 ॥

देख दशा सब सुर घबड़ाये।
पास शम्भू के हैं फरि धाये॥ 11 ॥

वनिय करी शंकर की जा के।
हाल युद्ध का दयिो बता के॥ 12 ॥

तब शवि दयिो देह वस्तिारी।
गयो लेट आगे त्रपिुरारी॥ 13 ॥

ज्यों ही काली बढ़ी अंगारी।

खड़ा पैर उर दयो नहिारी॥ 14 ॥

देखा महादेव को जबही।
जीभ काढ़ि लज्जति भई तबही॥ 15 ॥

भई शान्ति चहुँ आनन्द छायो।
नभ से सुरन सुमन बरसायो॥ 16 ॥

जय जय जय ध्वनि भई आकाशा।
सुर नर मुनि सब हुए हुलाशा॥ 17 ॥

दुष्टन के तुम मारन कारण।
कीन्हा चार रूप नजि धारण॥ 18 ॥

चण्डी दुर्गा काली माई।
और महा काली कहलाई॥ 19 ॥

पूजत तुमहि सकल संसारा।
करत सदा डर ध्यान तुम्हारा॥ 20 ॥

मैं शरणागत मात तहिारी।
करौ आय अब मोहि सुखारी॥ 21 ॥

सुमरौ महा कालकिा माई।
होउ सहाय मात तुम आई॥ 22 ॥

धरूँ ध्यान नशि दनि तब माता।
सकल दुःख मातु करहु नपिाता॥ 23 ॥

आओ मात न देर लगाओ।
मम शत्रुघ्न को पकड़ नशाओ॥ 24 ॥

सुनहु मात यह वनिय हमारी।
पूरण हो अभलिाषा सारी॥ 25 ॥

मात करहु तुम रक्षा आके।
मम शत्रुघ्न को देव मटिा को॥ 26 ॥

नशि वासर मैं तुम्हें मनाऊं।
सदा तुम्हारे ही गुण गाउं॥ 27 ॥

दया दृष्टि अब मोपर कीजै।
रहूँ सुखी ये ही वर दीजै॥ 28 ॥

नमो नमो नजि काज सैवारनि।
नमो नमो हे खलन वदिारनि॥ 29 ॥

नमो नमो जन बाधा हरनी।
नमो नमो दुष्टन मद छरनी॥ 30 ॥

नमो नमो जय काली महारानी।
त्रभिुवन में नहि तुम्हरी सानी॥ 31 ॥

भक्तन पे हो मात दयाला।
काटहु आय सकल भव जाला॥ 32 ॥

मैं हूँ शरण तुम्हारी अम्बा।
आवहू बेगि नि करहु वलिम्बा॥ 33 ॥

मुझ पर होके मात दयाला।
सब वधि कीजै मोहि निहाला॥ 34 ॥

करे नित्य जो तुम्हरो पूजन।
ताके काज होय सब पूरन॥ 35 ॥

नर्धिन हो जो बहु धन पावै।
दुश्मन हो सो मित्र हो जावै॥ 36 ॥

जनि घर हो भूत बैताला।
भागि जाय घर से तत्काला॥ 37 ॥

रहे नही फरि दुःख लवलेशा।
मटि जाय जो होय कलेशा॥ 38 ॥

जो कुछ इच्छा होवें मन में।
सशय नहि पूरन हो क्षण में॥ 39 ॥

औरहु फल संसारकि जेते।
तेरी कृपा मलिं सब तेते॥ 40 ॥

॥ दोहा ॥

दोहा महाकलकि कीपढ़ै नति चालीसा जोय।
मनवांछति फल पावहि गोवन्द जानौ सोय॥